साहित्य से सिनेमा माध्यम में रूपांतरण

(सारा आकाश उपन्यास और फिल्म के विशेष संदर्भ में)

Medium Conversion from Literature to Cinema

(With reference to Sara Akash as a novel and a film)

एम.फिल. तुलनात्मक साहित्य उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध-सारांश

सत्र- 2016-2017

शोध निर्देशक

प्रो. प्रीति सागर

अधिष्ठाता (साहित्य विद्यापीठ)

शोधार्थी

विवेकानन्द

एम. फिल. तुलनात्मक साहित्य

पंजीयन सं.2016/02/205/005

हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग

साहित्य विद्यापीठ

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997 क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

गांधी हिल्स, वर्धा - 442001 (महाराष्ट्र) भारत

शोध-सारांश

प्रस्तुत शोध लघु प्रबंध ***साहित्य से सिनेमा में माध्यम रूपांतरण (सारा आकाश उपन्यास और फिल्म के विशेष संदर्भ में)*** पर गहराई के साथ शोध कार्य किया गया है। प्रस्तुत शोध विषय को चार अध्यायों में विभाजित किया गया है जिसमें सिनेमा और साहित्य की सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, भाषा-शिल्प निर्माण आदि उपस्थित विषय का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

पहले अध्याय के अंतर्गत साहित्य और सिनेमा के इतिहास में क्या योगदान रहा? किस तरह सिनेमा का निर्माण सर्वप्रथम साहित्यिक रचनाओं पर हुआ? सिनेमा और साहित्य दोनों के माध्यम से कितना सफल हुआ है साथ ही साहित्य का इतिहास में फिल्म निर्माण में क्या योगदान रहा इन सब चीजों का विश्लेषण किया गया है।

दूसरे अध्याय के अंतर्गत सिनेमा और साहित्य की सैद्धांतिकी क्या है? साहित्य की अपनी दृष्टि क्या है? और सिनेमा की दृष्टि क्या है? इन दोनों में आपस में भिन्नता होने के बावजूद क्या-क्या समानता है? फिल्म कहां तक दर्शकों को फिल्म के माध्यम से प्रभावित करता है? साहित्य समाज में साहित्य के माध्यम से क्या योगदान दिया और साहित्य समाज पर कितना निर्भर है।

तीसरे अध्याय के अंतर्गत 'सारा आकाश' और फिल्म निर्माण प्रक्रिया में किन-किन दिक्कतों का सामना करना पड़ा? निर्देशक एवं साहित्यकार को दोनों में क्या अंतर दिखाई पड़ता है? निर्देशक फिल्म बनते वक्त कैन-कौन से मुद्दा उठाया है और कौन-कौन सा मुद्दा छोड़ दिया है? वहीं कथाकार उपन्यास के माध्यम से क्या-क्या समस्या उठाया है? इस अध्याय के अंतर्गत उन सभी बिंदुओं को विस्तारपूर्वक बताया गया है।

चौथे अध्याय के अंतर्गत 'सारा आकाश' फिल्म निर्माण में चुनौतियां विषय के अंतर्गत 'सारा आकाश' एवं फिल्म रूपांतरण में किन-किन चुनौतियों का सामना करना पड़ा? फिल्म निर्माण करते वक्त वह किन-किन चीजों को फिल्म के माध्यम से दर्शकों को अपने फिल्म में दिखने की कोशिश की है? उपन्यासकार अपने कथा के माध्यम से क्या-क्या दिखाना चाह था? फिल्म रूपांतरण करते वक्त निर्देशक ने क्या-क्या दिखाया है? निर्देशक ने रूपांतरण में कथाकार को कितना संतुष्ट कर पाया है? साहित्य से सिनेमा में परिवर्तन में इन सभी समस्याओं को रूपांतरण के माध्यम से प्रस्तुत शोध में दिखने का प्रयत्न किया गया है।

किसी भी शब्द, प्रकाश, दृश्य और ध्वनि एवं रूप में परिवर्तित करने की प्रक्रिया फिल्म निर्माण है। प्रस्तुत शोध में शब्द के मूर्तिकरण की प्रक्रिया और उसके मार्ग में आने वाली समस्याओं का अध्ययन किया गया है। साथ ही उपन्यास से फिल्म रूपान्तरण में किन किन विषयों में परिवर्तन किया गया है साथ ही निर्देशक ने मूल रूप से किन विषयों पर अपनी विशेष रुचि दिखाई है। इन सब विषयों को गहराई से अध्ययन कर शोध विषय को मूल उद्देश्य को प्राप्त करने की कोशिश की गई है। साथ ही साहित्यिक रचना को फिल्म में रूपांतरित करने में वह कितना सफल हुआ है और वस्तुतः किस तरह वह रूपांतरण की प्रक्रिया से जुड़ा है आदि विषयों को विश्लेषित किया गया है।

फिल्म साहित्य की तरह एक भाषिक निर्मित मात्र नहीं है, फिल्म को प्रदर्शन योग्य बनाने में कई अन्य तत्व भी आवश्यक हैं। विधा एवं प्रस्तुति का अंतर, रूपांतरण की प्रक्रिया में कई समस्याएं उत्पन्न करता है। प्रस्तावित शोध में इस समस्या पर विस्तार से चर्चा की गई है और उस समस्या से फिल्म निर्देशक तथा साहित्यकार किस तरह से निपटने की कोशिश करता है सभी की गहराई से समीक्षा, आलोचना की गई है।

उपन्यास एवं फिल्म दोनों विधाओं का उसके सामाजिक, सांस्कृतिक एवं देशकाल और वातावरण में रखकर उनका आलोचनात्मक अध्ययन किया गया है। उपन्यास की मूल संवेदना फिल्मांकन के बाद

कहाँ तक सफल हो पाई है, उसका गुणात्मक, तुलनात्मक, विश्लेषणात्मक, मनोवैज्ञानिक अध्ययन किया गया है। शोध में फिल्म तकनीक और सैद्धांतिकी दोनों आधार पर माध्यम रूपांतरण की सूक्ष्म समीक्षा की गई है। फिल्म और उपन्यास के संवाद कैसे हैं, उसका शिल्प विधान कैसा है, किन-किन विषयों पर साहित्यकार ने फिल्म निर्देशक की परिवर्तन के लिए मंजूरी दी है आदि का उल्लेख शोध में किया गया है। निष्कर्षत: साहित्यिक कृति और उस पर बनी फ़िल्म का बड़ी सावधानी और गहराई से उस पर उठने वाले सभी सवालों को उठाया गया है साथ ही उसका उत्तर खोजने की कोशिश की गई है।

साहित्य और फ़िल्म का समाज से कैसा संबंध होता है और समाज किस तरह से इन दोनों से प्रभावित होता है आदि प्रश्नों को शोध का विषय बनाया गया है। साहित्यिक कृति और फ़िल्म किस तरह समाज के अंदर की समस्याओं को दिखाने और उसका निवारण करने में सफल होती है इन सब विषयों का चित्रण किया गया है। एक साहित्यिक कृति को फ़िल्म रूपान्तरण के द्वारा उसकी प्रासंगिकता को बढ़ाने में मदद मिलती है या नहीं। ऐसे तमाम विषयों का गहराई के साथ परीक्षण किया गया है।